Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

ग्रामीण पत्रकारिताः- समस्याएँ और संभावनाएँ

[1]मोहित राम चेलक, [2]डॉ. अश्वनी कुमार साहू
[1,2]सहायक प्राध्यापक
[1,2]आई.एस.बी.एम. विश्वविद्यालय, छुरा जिला-गरियाबंद (छ०ग०)

सारांशः-

ग्रामीण भारत की पहचान कृषि, परंपरा, संस्कृति और समाज की विविधताओं से होती है। देश की अधिकांश आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ऐसे में ग्रामीण पत्रकारिता का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह गाँवों की वास्तविक समस्याओं और संभावनाओं को उजागर कर समाज व शासन के बीच सेतु का कार्य करती है। लेकिन विडंबना यह है कि मुख्यधारा की पत्रकारिता में ग्रामीण क्षेत्र की खबरों को वह स्थान नहीं मिल पाता जिसकी वे हकदार हैं। संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित पत्रकारों का अभाव, तकनीकी पिछड़ापन और शहरीकेंद्रित मीडिया दृष्टिकोण ग्रामीण पत्रकारिता की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में ग्रामीण पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान परिदृश्य, समस्याओं और संभावनाओं का गहन विश्लेषण किया गया है। शोध से स्पष्ट होता है कि यदि ग्रामीण पत्रकारिता को सशक्त बनाया जाए तो यह न केवल लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करेगी बल्कि सामाजिक-आर्थिक विकास की प्रक्रिया को भी गति प्रदान करेगी।

शब्दकुंजी:- ग्रामीण पत्रकारिता, मीडिया, संचार, विकास पत्रकारिता, समस्याएँ, संभावनाएँ, लोकतंत्र, ग्रामीण भारत।

प्रस्तावनाः-

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाज की समस्याओं, आकांक्षाओं और उपलब्धियों को सामने लाना है। भारत जैसे देश में जहाँ लगभग 65% से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, वहीं ग्रामीण पत्रकारिता की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। ग्रामीण पत्रकारिता केवल समाचारों का संचार नहीं करती, बल्कि यह गाँवों के विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि, जल-संकट, महिला संशक्तिकरण और स्थानीय शासन से जुड़ी चुनौतियों को भी उजागर करती है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता ने ग्रामीण चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (त्रिपाठी,

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

2010)। स्वतंत्रता संग्राम के समय पत्रकारिता ने राष्ट्रवाद और सामाजिक चेतना जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। डिजिटल माध्यमों ने ग्रामीण पत्रकारिता के स्वरूप को नई दिशा दी है (चौधरी, 2021)। आजादी के बाद विकास पत्रकारिता का उदय हुआ और इसके अंतर्गत ग्रामीण पत्रकारिता का महत्व बढ़ा। लेकिन आधुनिक समय में, विशेषकर डिजिटल और कॉर्पोरेट मीडिया के दौर में, ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याएँ उपेक्षित होने लगी है। आजाद भारत में विकास को लेकर पहली बार जनता, सरकार, अधिकारी एकमत दिख रहे हैं। 70 वर्षों के बाद भी जब हम आप पीछे मुड़ कर देखते हैं तो पायेंगे कि ग्रामीण विकास को लेकर सदैव उदासीनता बरती गयी। योजनाएं थीं, धन आवंटित भी था फिर भी समाज में उस प्रकार का परिवर्तन नहीं दिख रहा था जैसी लोगों की अपेक्षा थी। ऐसा नहीं है कि विगत कई दशकों में विकास हुआ ही नहीं। सडक़ें बनीं, उद्योग लगे, स्वास्थ्य केंद्रों का निर्माण किया गया, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए गए, गरीबों के लिए सस्ते अनाज की व्यवस्था की गई, किसानों को सस्ते ऋण दिए गए, आपदा के समय ऋण माफी आदि अनेक सामाजिक व आर्थिक विकास के काम किए गए। लेकिन इन सबके बीच गांव की घोर उपेक्षा हुई। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, गांव केन्द्रित विकास की सोच में कमियों को पाठकों के समक्ष लाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। ग्रामीण पत्रकारिता को विकास पत्रकारिता का अभिन्न अंग माना गया है (सिंह, 2019)। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, रक्षा-सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, विकास, गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार, दहेज, आरक्षण, खेल, राजनीतिक उथल-पुथल, पर्यावरण आदि के अलावा गांव, खेत-खलिहान, ग्रामीण महिलाओं का जीवन स्तर, कन्या भ्रूण हत्या, गरीबी के कारण आत्महत्या, अपराध, सांस्कृतिक और धार्मिक आदि सामाजिक सरोकारों की पत्रकारिता में मीडिया आज भी अग्रणी भूमिका निभा रही है। सामुदायिक रेडियो ग्रामीण समाज की सहभागिता बढ़ाने का सशक्त माध्यम बनकर उभरा है (मीडिया डेवलपमेंट फाउंडेशन, 2020)। यही कारण है कि ग्रामीण पत्रकारिता की चुनौतियाँ और संभावनाएँ दोनों ही विमर्श का विषय है।

उद्देश्यः-

इस शोधपत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है -

भारत कृषि प्रधान देश है यह सर्वविदित है। भारत गांवों का देश है, हमको यह मानने में संकोच नहीं होना चाहिए। यह भी सत्य है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन,

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

तथा प्राकृतिक संसाधन आदि है। जबकि यह सब ग्रामीण धुरी पर केंद्रीत है तब उन गांवों की उपेक्षा कर उसके सारे संसाधनों से कमाई करके शहरों को बसाने या विकास करने में खर्च क्यों किया जा रहा है? क्या अपनी ही कमाई पर गांवों को विकास के लिए हाथ फैलाने की जरूरत पड़ेगी। लेकिन ऐसा हो रहा है। ग्रामीणों के सपनों को कुचल कर नहीं। शहरों और गांवों के बीच का अंतर जब तक समाप्त नहीं होगा भारत के विकसित होने की कल्पना करना खुली आंखों से सपने देखने जैसा ही होगा। ग्रामीण विकास की अनेकों चुनौतियां हैं जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। पूर्वांचल के ग्रामीण विकास तथा शेष भारत के ग्रामीण विकास की चुनौतियां कमोबेश एक सी ही हैं। ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका तथा उसके प्रभावों का अध्ययन करना ही उद्देश्य है।

1. ग्रामीण पत्रकारिता की परिभाषा और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना।
2. ग्रामीण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
3. ग्रामीण पत्रकारिता की प्रमुख समस्याओं को पहचानना।
4. ग्रामीण पत्रकारिता के विकास की संभावनाओं पर विचार करना।
5. भविष्य के लिए ग्रामीण पत्रकारिता को सशक्त बनाने के सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि

यह शोधपत्र वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रकाशित समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, सामुदायिक रेडियो, स्थानीय पत्रकारों के अनुभव प्राथमिक स्रोत पर आधारित है। जबकि द्वितीयक स्रोत पुस्तके, शोध आलेख, सरकारी रिपोर्ट, ऑनलाइन स्रोत और मीडिया से संबंधित पूर्व प्रकाशित साहित्य हैं। डेटा संग्रहण गुणात्मक दृष्टिकोण से किया गया है और तुलनात्मक पद्धति से विश्लेषण किया गया है।

शोध विस्तार

ग्रामीण पत्रकारिता की अवधारणा

ग्रामीण पत्रकारिता का आशय उन समाचारों और मुद्दों से है जो गाँव, किसान, कृषि, ग्रामीण शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायत व्यवस्था और स्थानीय विकास से जुड़े हो। यह पत्रकारिता ग्रामीण जनता की आवाज बनकर कार्य करती है। इसे विकास पत्रकारिता का ही एक अंग माना जाता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

गांव में रहने वालों के पास लोक साहित्य का अनूठा खजाना होता हैं लोगों से मिल कर इस बारे में जानकारी ली जाए आरै फिर उस का उपयोग पत्रकारिता में किया जाए तो समाचार अधिक रोचक हो जाएगा। गांवों में प्रचलित मुहावरे और लाकोक्तियां समाचार में सोने पर सुहागा का काम करती हैं। ग्रामीण रिपोर्टिंग से नीरसता का भाव पैदा होता है मगर ऐसा है नहीं यह हमारी सोच है जबकि ग्रामीण रिपोर्टिंग शहरी रिपोर्टिंग से कहीं अधिक सरल होती है तथा अगर मन से काम किया जाए तो पाठक उसे पढना भी पसंद करता है। गांव के बारे में रिपोर्ट लिखते समय सावधानी यह बरतनी होगी कि समाचार किसी के पक्ष या विरोध में न हो जाए। खेत खलिहान से जुड़ी यानि कृषि पत्रकारिता भी ग्रामीण पत्रकारिता का एक अंग है। भारत अभी भी एक कृषि प्रधान देश है और अब अखबारों में भी कृषि पत्रकारिता पर ध्यान दिया जाने लगा है। पत्रकारिता के माध्यम से हम किसानों को कृषि से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दे सकते हैं। इस के लिए सरकारी साधनों के अतिरिक्त पत्रकार के लिए अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण होता है। सरकार की ओर से किसानों को नए बीज, खाद और खरपतवार नाशक की जानकारी समय समय पर दी जाती रहती है मगर वह किसान के पास सही समय पर नहीं पहुंच पाती एसे में पत्रकार ही किसान की मदद कर सकते हैं। इस सब को देखते हुए सरकार ने एक किसान चैनल भी आरंभ किया है इस चैनल में कृषि से सम्बंधित जानकारी के लिए भी पत्रकारों की आवश्यकता रहती है।

खेती किसानी से सम्बंधित ग्रह नक्षत्रों की चाल मौसम के बारे में भविष्यवाणी और हवाओं के रुख के बारे में माघ आदि कवियों की अनेक कविताएं और उक्तियां गांवों में प्रचलित हैं मगर अब ये धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं जबकि आज भी मौसम विभाग की भविष्यवाणी के मुकाबले ये लोकोक्तियां अधिक सटीक बैठती हैं। ग्रामीण पत्रकारिता से जुड़े पत्रकार इन सब की जानकारी रखेंगे और इनका उपयोग करेंगे तो किसान और समाज दोनों के हित में होगा। पशु पक्षी भी मौसम की भविष्यवाणी अपने क्रिया कलापों से करते हैं जानकार लोग इनके आधार पर किसानों को सलाह भी देते हैं। खेती किसानी से जुड़े

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

पत्रकार अगर समय-समय पर ऐसी जानकारियों पर प्रकाश डालते रहें तो यह भी किसानों के हित में होगा। अंधविश्वास या टोटके कह कर इन बातों को नकारा नहीं जा सकता।

आजकल जैविक खेती गांव के किसानों के लिए मुनाफे का सौदा बन सकता है बशर्ते उसे इस बारे में जानकारी दी जाये। ऐसे में ग्रामीण पत्रकार किसानों को अपने लेखों के माध्यम से इसकी सम्पूर्ण जानकारी दे सकते है, जिससे गांवों के किसानों को इसका लाभ मिल सकेगा और गांव के लोगों का जीवनयापन ठीक तरह से हो सके।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता आंदोलन के समय ग्रामीण जनजीवन पर आधारित कई समाचार पत्र निकले। गाँधी जी के यंग इंडिया और हरिजन में ग्रामीण भारत की समस्याएँ केंद्र में रहती थीं। 1960-70 के दशक में विकास पत्रकारिता के दौर में ग्रामीण मुद्दों पर अधिक ध्यान दिया गया। 1990 के बाद निजी चैनलों और कॉर्पोरेट मीडिया के बढ़ते प्रभाव से ग्रामीण मुद्दे हाशिए पर जाने लगे।

स्वतंत्रता से पूर्व की ग्रामीण पत्रकारिता

भारत में ग्रामीण पत्रकारिता का उदगम कृषि पत्रकारिता के साथ हुआ। हांलाकि कृषि को एक केन्द्र बिन्दु माना जाता है, लेकिन मुददे कई और भी जुडे है। पहला कृषि पत्र 1914 में कृषि सुधार का प्रकाशन शुरू किया गया। लेकिन 9वीं सदी से पूर्व ही भारत में अनेक ग्रन्थों की रचनाऐं हुई, जिनमें कृषि पाराशर प्रमुख है। स्वतंत्रता से पूर्व किसान और सहकारी समाचार पत्रिका 1909, किसानी माला, किसान मित्र, किसानोंपकारक 1913, खेतीबाड़ी समाचार1923, हरिजन सेवक1943, किसान संदेश1941 आदि पत्र पत्रिकाओं की एक लम्बी सूची है ।

स्वतंत्रता के बाद की ग्रामीण पत्रकारिता

आजादी के बाद से पत्रकारिता ने कई कीर्तिमान स्थापित किये और नवीन आयामों को भी छुआ। सूचना क्रांति, विज्ञान एवं अनुसंधान ने संपूर्ण पत्रकारिता के स्वरूप को बदलने में महती भूमिका निभाई है। आजादी के बाद ग्रामीण जीवन को एक नई गति पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से गांवों की काया पलट के एक नयें युग का आरम्भ किया गया।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

ग्रामीण क्षेत्र में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलाव के साथ ही ग्रामीण पत्रकारिता में नया मोड आया। शोध कार्य शुरू हुए। कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए कई विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। पंचायत राज शुरू हुआ। सहकारिता आन्दोलन चलाया गया। अनेक पत्र-पत्रिकाऐं प्रकाशित होने लगे । 1960 के दशक तक सेवा ग्राम और सहकारी पशुपालन आदि पत्रों का प्रकाशन हुआ। 1966 में कृषि के क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात हुआ।

1970में आज, अमर उजाला, नवभारत, नई दुनिया, देशबन्धु, भास्कर, नवज्योति, आदि नें विभिन्न राज्यों के समाचारपत्रों ने कृषि एवं ग्रामीण परिवेश पर अपने स्तम्भ चालू किए। इस प्रकार आजादी के बाद ग्रामीण पत्रकारिता को नए आयाम मिले।

डिजीटलाइजेशन ने बदली ग्रामीण पत्रकारिता

आजादी पूर्व एवं आजादी के बाद भी कई दशकों तक ग्रामीण पत्रकारिता का सफर बेहद कठिन रहा। लेकिन बदलते दौर और सूचना विज्ञान द्वारा की गई प्रगति ने ग्रामीण पत्रकार की राह को कुछ हद तक आसान कर दिया है। आज से करीब 15 वर्ष पूर्व गावों में कार्य करने वाले संवाददाता को अपनी खबरों को कार्यालय में भेजने के लिए काफी मशक्कत करनी पडती थी। अपनी खबरों को भेजने के लिए फैक्स सुविधा का उपयोग करना पडता था, जो या तो गांव में एक ही स्थान पर होते थे या फिर पास के कस्बें में। ऐसे में कई बार फोन लाइन सहीं नहीं होने के कारण कई-कई बार फैक्स को कार्यालयों में भेजा जाता था, जिससे उसे आर्थिक नुकसान का सामना करना पडता था।

लगभग दशक पूर्व डिजीटलाइजेशन का दौर आया और मोबाईल कम्पनियों के सस्तें नेट प्लान और गांवो में खुलें साइबर केन्द्रों से ग्रामीण पत्रकारों की राह को आसान कर दिया। अब ग्रामीण पत्रकारों को पूर्व की तरह न तो फोटो के लिए किसी को पैसे देने की जरूरत और न ही फैक्स में अतिरिक्त पैसा देने की। डिजीटलाइजेशन के दौर में अब ग्रामीण पत्रकार मोबाईल के माध्यम से खबरों का आदान- प्रदान करने लगा। मोबाईल के टेलीग्राम और व्हाटसएप्प के अलावा अन्य एप के माध्यम से खबर भेजने लगा, जिससे उसे

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

पत्रकारिता करने में आसानी आने लगी। सोशल मीडिया के दौर के कारण अब उसे अपने क्षेत्र सहित जिलें, राज्य और देश की जानकारी रहने लगी।

वर्तमान परिदृश्यः-

ग्रामीण पत्रकारिता मुख्यतः छोटे अखबारों, स्थानीय पत्रिकाओं और सामुदायिक रेडियो तक सीमित है। बड़े मीडिया हाउस शहरी दर्शकों और विज्ञापनदाताओं पर केंद्रित हैं। डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने ग्रामीण पत्रकारिता को नया मंच दिया है, लेकिन तकनीकी सीमाएँ अब भी बाधक है।

ग्रामीण पत्रकारिता की समस्याएँ:-

1. संसाधनों की कमी - वित्तीय सहयोग का अभाव, अधूरी सुविधाएँ और कमजोर वितरण प्रणाली।
2. तकनीकी पिछड़ापन- इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की सीमित उपलब्धता।
3. प्रशिक्षित पत्रकारों का अभाव - ग्रामीण पत्रकारिता में कार्यरत अधिकांश लोग औपचारिक पत्रकारिता शिक्षा से वंचित ।
4 राजनीतिक और प्रशासनिक दबाव - ग्रामीण पत्रकारों पर अक्सर स्थानीय सत्ता केंद्रों का प्रभाव।
5. शहरी केंद्रित मीडिया - राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण मुद्दों को प्राथमिकता नहीं दी जाती।
6. विश्वसनीयता का संकट - कई बार अपुष्ट खबरें और अफवाहे ग्रामीण पत्रकारिता की छवि को प्रभावित करती है।

ग्रामीण पत्रकारिता की सम्भावनाये :-

1. सामुदायिक रेडियो का विस्तार - यह ग्रामीण पत्रकारिता का सबसे सशक्त मंच बन सकता है।
2. डिजिटल तकनीक का उपयोग -स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच बढ़ने से ग्रामीण पत्रकारिता को नई दिशा मिल सकती है।
3. स्थानीय भाषाओ का महत्व- क्षेत्रीय भाषाओ और बोलियों में समाचार प्रस्तुत करने से जनसंपर्क मजबूत होगा।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

4. सरकारी और गैर-सरकारी सहयोग ग्रामीण पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए योजनाएँ और प्रशिक्षण आवश्यक ।

5. जन-जागरुकता और विकास शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि सुधार और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों पर सकारात्मक बदलाव लाने में ग्रामीण पत्रकारिता सक्षम है।

सीमित संसाधन सीमित दायरा

ग्रामीण पत्रकारों की अगर बात की जाये तो उनके पास कार्यालयों में बैठे पत्रकारों जैसे अत्याधुनिक संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते उनका पत्रकारिता जीवन सदैव ही अभावों की बलि चढता है। इन अभावों के बावजूद ग्रामीण पत्रकार अपने पत्रकारी के जुनून से पीछे नहीं हटता, बल्कि विषम परिस्थितियों में भी अपने कार्य को अंजाम तक पहुंचाता है। गांवों में एक और जहाँ अत्याधुनिक संसाधनों के अभाव में उसे अपने समाचार भेजने में परेशानी का सामना करना पडता है। हांलाकि बदलते दौर ने गांव-गांव में बिजली और कम्पयूटर तक अपनी पहुंच बना ली है, नहीं तो पहले घंटो तक गांव से दूर एसटीडी बूथ पर फैक्स के माध्यम से खबरों को कार्यालयों तक पहुंचाया जाता था। इसके अलावा ग्रामीण पत्रकारों का दायरा बहुत ही सीमित है। ग्रामीण पत्रकारों को उनके क्षेत्र सहित आस-पास की ग्राम-पंचायतों की खबरों की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। जिससे उसका पत्रकारिता सहित सोच का दायरा बेहद सीमित क्षेत्र तक हो जाता है। ग्रामीण पत्रकार अपनें क्षेत्र विशेष की समस्याओं को खबरों को भेजने तक ही सीमित रह जाता है।

सामाजिक दायरों में बंधा ग्रामीण पत्रकार-

बदलते दौर की चुनौतिया-प्रिंट हो या इलेक्ट्रानिक या फिर सोशल मीडिया का विस्तार आज के दौर में तीव्र गति से हो रहा है, लेकिन इन सबके मध्य ग्रामीण पत्रकारिता की सूरत और सीरत में मामूली बदलाव ही आया है। अगर ये कहा जाए कि गांव, गांववासियों की भांति ग्रामीण पत्रकारिता की स्थिति शोचनीय है तो यह गलत नहीं होगा।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

हांलाकि पत्रकारिता की अपनी अलग चुनौतियां है, परन्तु ग्रामीण इलाकों में ये चुनौतिया कम नहीं है। ग्रामीण पत्रकारिता से जुड़े पत्रकार कोशिश करते है कि उनके पास आय के दूसरे भी स्रोत हो, क्योंकि केवल पत्रकारिता के भरोसे उनका और उनके परिवार का पालन पोषण सम्भव नही है। पत्रकारिता के जानकारों का अनुभव है कि ग्रामीण पत्रकारों का वेतन बहुत ही कम होता है, जो उन्हे न्यूज कंटिग के आधार पर मिलता है। कम वेतन की वजह से उनपर पत्रकारिता के अलावा घर के पालन पोषण का भी दवाब हमेशा बना रहता है।

ग्रामीण पत्रकारों के लिए सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण मुददा है, जो ग्रामीण पत्रकारों की चुनौतियों को बढाता है। उन पर सामाजिक दवाब सहित स्थानीय राजनीतिक दवाब हमेशा बना रहता है। कई बार शासन और प्रशासन के खिलाफ खबरें छापे जाने पर ग्रामीण पत्रकारों के साथ हाथापाई या उन्हे मारने की धमकी जैसी घटनाओं से गुजरना पडता है।

कार्यालयों में बैठने वाले मुख्यधारा के पत्रकारों की तुलना में संस्थानों के सहयोग की कमी के कारण उनकी रिपोर्ट में गुणवता की कमी होती है। कई बार तो ग्रामीण पत्रकार को अपनी खबर छपवा पाना एक बडी चुनौती जैसा होता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में देखने में आता है कि ग्रामीण पत्रकार मौके पर रह कर उसके गांव की राष्ट्रीय स्तर की खबर को कवरेज करता है। लेकिन मुख्यधारा का पत्रकार कई बार ग्रामीण पत्रकार का नाम तक खबर में नहीं देता। इस कारण ग्रामीण पत्रकार मेहनत करने के बाद अपने को ठगा सा महसूस करता है। ग्रामीण इलाकों में संसाधनों का अभाव होने के कारण ग्रामीण पत्रकारों को भारी परेशानी का सामना करना पडता है।

फेक न्यूज भी बडी समस्या

यूं तो फेक न्यूज पत्रकारिता के लिए बडी समस्या है, परन्तु ग्रामीण पत्रकारिता के लिए ये बडी समस्या है। गांवों में व्याप्त और अंधविश्वासों को लेकर आए दिन फेक न्यूज का दौर चलता है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण पत्रकारों को भारी परेशानी का सामना करना पडता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

ग्रामीण पत्रकार पर बढ़ता दवाब

अखबारों और टीवी चौनलों की बढती प्रतिस्पर्धा के कारण ग्रामीण पत्रकार को जो सबसे बड़ी चुनौती उन्हें दी गई अतिरिक्त जिम्मेदारी की है। आज एक ग्रामीण पत्रकार को केवल खबरों के सम्प्रेषण के लिए ही नहीं बल्कि विज्ञापन भेजने सहित अखबार की प्रति बढ़ाने का कार्य भी दे दिया गया है। ऐसे में इन दबावों के चलते ग्रामीण पत्रकार अपने पत्रकारिता धर्म से दूर हो अन्य कार्यो में लगने उस पर मानसिक दवाब है। कार्यालयों द्वारा आए दिन तीज-त्यौहारों, राष्ट्रीय पर्वो सहित चुनावों में विज्ञापन का दबाव बढ़ाने से ग्रामीण पत्रकारों को भारी परेशानी होती है। ऐसे में कई बार तो ऐसा होता है कि लगातार बढते दवाब के कारण उसे पत्रकारिता छोडनी पडती है या फिर वो अगर दवाब में विज्ञापन दे भी देता है तो उसे उसका भुगतान लेने में भारी परेशानी होंती है। इन सभी चुनौतियों के कारण ग्रामीण पत्रकार को भारी परेशानी का सामना करना पडता है।

सफल उदाहरण

कबीर संचार (छत्तीसगढ़) और गांव कनेक्शन (लखनऊ से प्रकाशित अखबार) ग्रामीण पत्रकारिता के उत्कृष्ट उदाहरण है। सामुदायिक रेडियो स्टेशन (जैसे "रेडियो बुनकर", "रेडियो नमक" आदि) ने गाँवों की आवाज को नयी पहचान दी है। कई स्वतंत्र पत्रकारों ने सोशल मीडिया और ब्लॉग के माध्यम से ग्रामीण समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया है।

निष्कर्ष:-

वर्तमान समय में समाचार पत्रों में ग्रामीण पत्रकारिता को लेकर विकासात्मक परिवर्तन हुए है, लेकिन अभी भी ग्रामीण पत्रकारिता का क्षेत्र शहरी पत्रकारिता के मुकाबलें पिछडा हुआ है और अभी इसे विकास की ओर आवश्यकता है, वहीं भारत की आत्मा गांवों में निवास करती है, ऐसे में अगर आत्मा का विकास ही नहीं होगा तो शरीर का विकास किस प्रकार सम्भव होगा। अभी ग्रामीण परिवेश की संभ्यता को लोगों तक पहुंचाना पूरी तरह से सार्थक नहीं हुआ है। ग्रामीण प़त्रकारिता से जुडे लोगों के लिए समाचार पत्रों सहित सरकारों को साझा प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे वे अपने पत्रकारिता धर्म को निभाने के साथ ही अपने परिवार का पालन आसानी से कर सके। इनकी सुरक्षा के प्रयास

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 60-71

भी प्रशासन को करने की आवश्यकता है।ग्रामीण पत्रकारिता लोकतांत्रिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग है। यह न केवल ग्रामीण समाज की की समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि सरकार और नीति-निर्माताओं को संवेदनशील भी बनाती है। यद्यपि इसके सामने अनेक चुनौतियों है, जैसे संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव और शहरीकेंद्रित मीडिया दृष्टिकोण, परंतु डिजिटल क्रांति और सामुदायिक रेडियो जैसे माध्यमों ने इसके लिए नई संभावनाओ के द्वार खोले है। भविष्य में यदि ग्रामीण पत्रकारिता को संस्थागत सहयोग, तकनीकी संसाधन और प्रशिक्षण उपलब्ध हो, तो यह भारत के लोकतंत्र को और अधिक सशक्त बना सकती है।

संदर्भ सूचीः-

1. सिंह, राजेश (2019) ग्रामीण पत्रकारिता का समाजशास्त्र नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
2. चौधरी, अरविंद (2021) भारतीय पत्रकारिता और ग्रामीण समाज. जयपुरः साहित्य भवन।
3. चौबे, आनंद (2018). विकास पत्रकारिता और मीडिया का बदलता स्वरूप. दिल्लीः पुस्तक महल।
4. मीडिया डेवलपमेंट फाउंडेशन (2020). भारत में ग्रामीण पत्रकारिता की स्थिति।
5. "गाँव कनेक्शन" और विभिन्न सामुदायिक रेडियो के ऑनलाइन संस्करण।
6. मधुप, डॉ महेन्द्र,(2009) ग्रामीण एवं पर्यावरण पत्रिका, पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठयक्र
7. उपाध्याय, डॉ अनिल कुमार, (2011) संचार एवं विकासात्मक संचार पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातक पाठयक्रम
8. मेहता, डी० एस मास कम्यूनिकेशन एण्ड जर्नलिज्म इन इण्डिया
9. तिवारी डॉ अर्जुन आधुनिक पत्रकारिता
10. त्रिपाठी, डॉ रमेश चन्द्र, पत्रकारिता सिद्वान्त एवं स्वरूप नई दिल्ली
11. जैन, प्रो० रमेश, भारत में हिन्दी पत्रकारिता